अपभ्रंश के शिक्षाप्रद सूत्र

१. **दोस वि गुण हवन्ति संसग्गिए।**
– सत्संगति से दोष भी गुण हो जाते हैं।

२. **सुन्दर ण होइ वहु।**
– किसी चीज में अति अच्छी नहीं होती।

३. **असहायहो णत्थि सिद्धि।**
– असहाय व्यक्ति की संसार में सिद्धि नहीं होती।

४. **सिद्धि णाणेण बिणु ण दिट्ठि।**
– ज्ञान के बिना सिद्धि नहीं दीख पड़ती।

५. **जहिं परम–धम्मु तहिं जीव–दय।**
– जहाँ परम धर्म होगा जीव–दया भी वहीं रहेगी।

६. **कोहु मूलु सव्वहुँ वि अणत्थहुँ।**
– क्रोध ही सब अनर्थों का मूल है।

७. **धम्मु अहिंसा परमुजए।**
– इस जगत में अहिंसा ही परम धर्म है।

८. **विज्जाविहिणु मा करहि मित्तु।**
– विद्या–विहीन को कभी अपना मित्र मत बनाना।

९. **धम्मु अहिंसउ सद्दहहि।**

– अहिंसा धर्म की श्रद्धा करो।

१०. **धम्मु खमाइ होइ गरुयारउ।**

– धर्म क्षमा से गौरवशाली होता है।

११. **दुट्ठ पक्खु ण कयावि धरेवउ।**

– दुष्ट का पक्ष कभी भी ग्रहण नहीं करना चाहिये।

१२. **जो सूरउ जो इंदियइं जिणइ।**

– शूर वही है जो इन्द्रियों को जीतता है।

१३. **जइ णत्थि संति तो पडइ मारि।**

– जहाँ शान्ति नहीं होती, वहाँ आपत्ति आती है।

१४. **रोसवंतु णरु कह वि ण रुच्चइ।**

– क्रोधी व्यक्ति किसी को भी अच्छा नहीं लगता।

१५. **रोसु करइ बहु आवइ संकडु।**

– क्रोध कई आपत्तियाँ और संकट उत्पन्न करता है।

१६. **अलसहु सिरि दूरेण पवच्चइ।**

– आलसी व्यक्ति से लक्ष्मी दूर रहती है।

१७. **विणु जीवदयाइ ण अत्थि धम्मु।**

– जीव-दया के बिना धर्म नहीं होता।

१८. **अविणीयं किं संबोहिएण।**

– जो विनयहीन है उसे सम्बोधित करने से क्या फल?

१९. **उज्जम विणु होइ ण का वि सिद्धि।**

– उद्यम के बिना कोई भी सिद्धि नहीं होती।

२०. **विणु विणएण कवणु पावइ सिउ।**

– विनय गुण के बिना कौन व्यक्ति शिव (कल्याण) पा सकता है।

२१. **सुयणहो फलु परगुणसुपसंसणु।**

– सज्जनता का फल दूसरों के गुणों की प्रशंसा करना है।

२२. **विणएँ लच्छि कित्ति पावइ।**

– विनय से ही लक्ष्मी और कीर्ति प्राप्त होती है।

२३. **सरणें पइट्ठ जीव रक्खिज्जइ।**

– शरण में आये हुए जीव की रक्षा करनी चाहिये।

२४. **अच्छहु दुज्जण दूरि वसंतइ।**

– दुर्जन से दूर रहना अच्छा है।

२५. **जइसउ करइ सु तइसउ पावइ।**

– जो जैसा करता है वह वैसा ही पाता है।

२६. **दया मूल–धम्मु।**

– धर्म का मूल दया है।

२७. **जीविउ धण जुव्वणु अथिरु जाणि।**

– जीवन, धन और जवानी को अस्थिर जानो।

२८. **पर उवएसु दिंतु बहु जाणउ।**

– पर उपदेश कुशल बहुतेरे।

२९. **तिह चउ जिह वुच्चइ साहु साहु।**

– दान ऐसा दो कि सब धन्य-धन्य कहने लगें।

३०. **सयलु वि उत्तिमपुरिसपसंगें।**

– उत्तम पुरुष की संगति से सब कुछ संभव है।

३१. **अकुसुलु कुसलहिं ण जुज्झेवहु।**

– कुशल लोगों को अकुशल लोगों से नहीं लड़ना चाहिए।

३२. **बोलिज्जइ तं जं णिव्वहइ।**

– जितना निभ सके उतना ही बोलो।

३३. **गुणवंतउ माणुसु भल्लउ।**

– गुणवान मनुष्य ही भला होता है।

३४. **विणएं इंदियजउ संपज्जइ।**

– विनय से इन्द्रियों पर विजय प्राप्त होती है।

३५. **णउ कहिं मि मरण दिए उव्वरइ।**

– मरण के दिन कहीं भी रक्षा नहीं हो सकती।

३६. **सोहइ णरवरू सच्चर वायए।**

– मनुष्य सत्य वाणी से शोभता है।

३७. **सोहइ माणुसु गुण संपत्तिए।**

– मनुष्य गुणरूपी संपत्ति से शोभता है।

३८. **सोहइ कज्जारंभु समत्तिए।**

– कार्यारम्भ कार्य की समाप्ति से शोभता है।

३९. **उवसग्गु वि हवंतु णासिज्जइ।**

– विघ्न उत्पन्न होते ही उसका विनाश करना उचित है।

४०. **तिह जीवहि जिह परिभमइ कित्ति।**

– जीना ऐसे जिससे कीर्ति फैले।

४१. **तिह हसु जिह ण हसिज्जइ जणेण।**

– ऐसे हँसो जिससे दूसरों की हँसी के पात्र न बनो।

४२. **तिह भुज्जु जिह ण मुच्चहि धणेण।**

– भोगों को इसप्रकार भोगो कि धनहीन न बन जाओ।

४३. **तिह मरु जिह णावहि गब्भवासें।**

– मरण ऐसा हो कि पुनः जन्म धारण न करना पड़े।

४४. **तिह रज्जु पालें जिह णवइ सत्तु।**

– राज ऐसा करो कि शत्रु भी झुक जाए।

४५. **किं कायरणर विद्धंसणेण।**

– कायर पुरुष को मारने से क्या लाभ?

४६. **जायहों जीवहों सव्वहों विणासु।**

– जो जीव जन्मता है उसका मरण भी निश्चित है।

४७. **जावेंहिं जीवहों ढुक्कइ मरणु, तॉवॅहिं जगे णाहिं को वि सरणु।**

– जब जीव की मृत्यु आती है तो उसे कोई भी शरण नहीं दे सकता।

४८. **जं कल्लि करंतउ करिसु अज्जु।**

– जो कल करना है उसे आज ही करो।

४९. **आढत्तइ कम्मत्तइ पढमुकाउ चिंतेवउ।**

णरसत्ति वि धणजुत्ति वि देसु कालु जाणेवउ।

– कार्य को प्रारम्भ करने पर पहले कार्य की चिन्ता करनी चाहिये। मनुष्य, शक्ति, धन, युक्ति तथा देशकाल को जानना चाहिये।

५०. **छिद्दण्णेसिहिं को रंजिज्जइ।**

– छिद्रों का अन्वेषण करनेवालों से कौन प्रसन्न हो सकता है।

५१. **ते बुह जे बुहहं ण मच्छरिय।**

– पण्डित वही है जो पण्डितों से ईर्ष्या नहीं करते।

५२. **किं किज्जइ मणुएं दव्व–विणु।**

– द्रव्यविहीन मनुष्य क्या करे?

५३. रोसें णउ विसिट्ठु पहरेवउ।

– क्रोध में आकर विशिष्ट का परिहार नहीं करना चाहिये।

५४. उण्णइं पावइ गुण गरुयउ गुणि।

– गुणी महान् गुणों से उन्नति पाते हैं।

५५. धणदूसणु सढखलयण भरणु।

– कुटिल और दुष्ट लोगों का पालन करना धन का दूषण है।

५६. विणु मणसुद्धिइ कहिं धम्मसिक्ख।

– मन की शुद्धि के बिना धर्म की शिक्षा नहीं होती।

५७. जं चिंतिज्जइ विप्पिउ परहो तं एइ खणद्धि णियघरहो।

– जो कुछ दूसरों के लिए अप्रिय सोचा जाता है वही क्षणार्ध में अपने घर आ पहुँचता है।

५८. उज्जम विणु दुह–दालिद्द––बिद्धि।

– उद्यम के बिना दु:ख एवं दारिद्र की ही वृद्धि होती है।

५९. किं दव्वे दाणविवज्जिएण।

– ऐसे द्रव्य से क्या लाभ जो दान में न दिया जा सके?

६०. **मित्तहो फलु हियमिय उवएसणु।**

– मित्रता का फल हित-मित उपदेश है।

६१. **विहवहो फलु दुत्थिय आसासणु।**

– वैभव का फल दीन-दुखियों को आश्वासन देना है।

६२. **गइ पाणी पहलउ पालि वंधु।**

– पानी निकल जाने के पहले पाल बाँधो।

६३. **थिर होइ कित्ति थिरकम्म धुवे।**

– स्थायी कीर्ति स्थायी कार्यों से होती है।

६४. **दुज्जण चल्लणीव सम सीसइ।**

– दुर्जन पुरुष चलनी के समान होते हैं।

६५. **वयरू ण होई सुंदरू।**

– वैर सुंदर नहीं होता।

६६. **किं पुत्तें मइलइ वंसु जेण।**

– ऐसे पुत्र से क्या लाभ जिससे वंश कलंकित हो?

***